# काका कालेलकर के साहित्य में धार्मिक चिंतन

**श्रीमती प्रीति व्यास (शोधार्थी)**
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, मध्य प्रदेश
**डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे (शोध निर्देशक) —**
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
महाराजा रणजीत सिंह महाविद्यालय, इन्दौर, मध्य प्रदेश

**शोध संक्षेप** — काका साहब के व्यक्तित्व को किसी भी एक साँचे में ढालना कठिन है। वे शिक्षक, शिक्षाशास्त्री, पत्रकार, लोक शिक्षा के आचार्य, समाजशास्त्री, स्वातंत्रय सैनिक, गांधी विचार के भाष्यकार थे। जीवन के अनेक पहलुओं का उन्होंने गहराई के साथ चिंतन किया है एवं नये परिप्रेक्ष्य में इन्हें मौलिकता प्रदान की। काका साहब का चिंतक रुप अधिक उभरकर आया। उन्होंने जटिल से जटिल तत्वों का बिल्कुल सरल शब्दों में निरुपण किया। भारतवर्ष की आध्यात्मिक साधना जो वेद, उपनिषद, गीता, ब्रह्मसूत्र, संतसाहित्य और भक्ति साहित्य में विकसित हुई, उसी का पोषण काका साहब के व्यक्तित्व को मिला। काका साहब की निरंतर खोज उन्हें चिंतनात्मक क्षेत्र में काफी आगे लेकर गई। काका साहब कालेलकर का जीवनभर चिंतन चलता रहा तथा अपने चिंतन एवं जीवन के अनुभवों का निचोड़ उनके साहित्य में अभिव्यक्त हुआ। यह अनुभव हमारे समाज के लिये उपयोगी है। प्रस्तुत शोधपत्र में काका कालेलकर के साहित्य में धार्मिक चिंतन के विविध पहलुओं का अवलोकन किया गया है।

**प्रस्तावना**

प्रत्येक साहित्य का जीवन से सरोकार होता है। धार्मिक सरोकार भी साहित्य के सृजन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। वर्तमान समय में मनुष्य भौतिक सुख सुविधाओं के पीछे दौड़ रहा है। व्यक्ति के पास सबकुछ है लेकिन मानसिक शांति नहीं है। काका साहब का साहित्य इस दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान देता है।

ृकाका कालेलकर के साहित्य में भी धार्मिक चिंतन सर्वत्र देखने को मिलता है। इस तरह के साहित्य में उनके जीवन के अनुभवों का निचोड़ है। हमारा समाज धर्म से अनुशासित रहता है। धर्म हमें बुरे कार्य करने से बचाता है तथा अच्छे कार्यो की ओर प्रेरित करता है। धर्म से हमारी आध्यात्मिक उन्नति होती है।

काका साहब ने अपने साहित्य के माध्यम से धार्मिक अनुभवों को बताते हुए कहा है कि धार्मिक अनुभव होने पर व्यक्ति सभी प्रकार की लालसा छोड़कर अपनी आत्मा तथा व्यक्तित्व का विकास करता है। उन्होंने गीता के प्रेरक तत्वों की व्याख्या सरल शब्दों में की है जो कि हमारे जीवन को आसान बनाने में सहायक है। काका कालेलकर ने अपने साहित्य के माध्यम से यह भी कहा है कि यदि व्यक्ति मृत्यु को हमेशा याद रखेगा तो वह बुरे कार्यो को करने से भी बचेगा साथ ही वह अपने जीवन को उपयोगी कार्य में लगायेगा।

**काका कालेलकर के साहित्य में धार्मिक चिंतन:**

काका साहब का साहित्य एक चिंतक के रुप में देखने को मिलता है। ये साहित्य हमें सिखााता है कि हमें अपना जीवन किस तरह जीना चाहिये जिससे हमारा जीवन आसान हो जाये। मानव जीवन संघर्षो से भरा है। हमारे जीवन में ऐसी कई समस्याएँ आती है जिनसे हम घबराकर गलत कदम उटा लेते है। उस तरह की समस्याओं का समाधान उनके कृतित्व में मिलता है। काका साहब ने पुरानी संस्कृति में जो भी प्रेरणादायी बाते उनको बिल्कुल साधारण शब्दों में, पर वर्तमान जीवन के संदर्भ में समझाने की कोशिश अपने साहित्य के माध्यम से की है। उनके साहित्य को पढ़कर हम अध्यात्म की ओर अग्रसर होते है तथा इससे हमारा आंतरिक जीवन समृद्ध होता है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है कि मनुष्य किस तरह धर्म विषयक कल्पनाएँ वृद्धों से, कौटुम्बिक रीति रिवाजों से और धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं से प्राप्त करता है। जब व्यक्ति का स्वतन्त्र व्यक्तित्व खिलता है तब उसे मौलिक धर्मानुभव होते है।

धार्मिक अनुभवों के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए वे कहते है — "जिस अनुभव के द्वारा आत्मा का विकास होता है, व्यक्तित्व बढ़ता है, अतिन्द्रिय वस्तुओं पर उचित श्रद्धा बैठती है और मनुष्य इन्द्रिय सुख की लालसा छोड़कर, देह का मोह छोड़कर ऊँचे चढ़ता है, वह धर्मानुभव है।" (१)

धर्म के सम्बन्ध में उनका चिंतन जीवन भर चलता रहा जिसे उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया एवं यह मानव समाज के लिये उपयोगी है।

गीता के प्रेरक तत्व जो हमारे जीवन योग के लिये आवश्यक है, उन तत्वों की काका साहब ने साधारण शब्दों में व्याख्या की है, जिसे जनसाधारण भी आसानी से समझ सकता है। गीता में सभी ऋषियों के मौलिक चिंतन और अनुभवों का सार है, इसलिये यह हमारे जीवन के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रेरक कृति है। इसकी व्याख्या काका साहब ने एक उदाहरण के द्वारा इस तरह से की है — "सब उपनिषद मानों कामधेनु गाय है। उनका दूध या सार भगवद् गीता में आ जाता है। गाय अपने बछड़े को निमित्त करके सारी दुनिया को दूध देती है। इसी तरह भगवान ने अर्जुन का मिष करके मानव जाति को उपनिषदों का सार दिया है।" (२)

ृगीता हमें जीवन जीने की कला को सिखाती है। गीता के प्रेरक तत्वों की काका साहब ने अपनी दृष्टि से व्याख्या की है। उन्होंने गीता को उत्तम शास्त्र कहा है। काका साहब ने अपने साहित्य के माध्यम से मृत्यु को ईश्वर का उत्तम वरदान माना है एवं उन्होंने कहा है कि मृत्यु को हमेशा याद रखना चाहिये, इससे हम अपने जीवन का दुरुपयोग नहीं कर पाएंगें। मृत्यु का स्मरण हमेशा रहने से हर्ष, शोक से परे आनंद का साक्षात्कार हम अनुभव कर सकते है और इसी कारण हमारा चित्त प्रसन्न रहता है तथा उसका स्वास्थ्य पर भी अच्छा प्रभाव पड़ता है।

काका साहब ने मृत्यु को हमारा श्रेष्ठ मित्र कहा है। उन्होंने जीवन को अद्भुत उपन्यास मानते हुए कहा है कि — "जीवन एक अद्भुत उपन्यास है जिसके लेखक हम नहीं किन्तु भगवान है। उपन्यास में तरह—तरह के अकस्मात आते है जिसका भी लेखक या कर्ता की दृष्टि के प्रयोजन होता है। हम उसे नहीं जानते है, इसीलिये हम उसे अकस्मात् कहते है। अकस्मात् का कारण और प्रयोजन समझने की हम कोशिश करें और न समझ सकें तो भगवान के लुत्फ के साथ, रस के साथ हम एक रस बनें। इतनी रसिकता हमारे चित्त में होनी ही चाहिए।" (३) काका साहब ने कहा है कि जीवन के लिये मरण आवश्यक है। यदि मरण न हो तो जीवन में आस्तिकता न रहेगी। उन्होंने अपने साहित्य में आत्महत्या विरोधी बात भी कही है जो कि वर्तमान संदर्भ में हमारे समाज के लिये उपयोगी है।

यह माना जाता है कि आत्मा में ही जीवन का सार सर्वस्व आ जाता है। किन्तु काका साहब कालेलकर मानते थे कि आत्मदर्शन युक्त जीवनदर्शन में ही सार है। उन्होंने आत्मदर्शन युक्त जीवनदर्शन का महत्व बताते हुए लिखा है — "इत्र में भी फूल का सार सर्वस्व आ जाता है पर इत्र फूल नहीं है। सुभग आकृति, ताजगी, कोमलता, यौवन, रंगों का विलास, सुगन्ध और इन सबके साथ क्षण जीवत्व मिलकर फूल बनता है। इसलिए वह हमें प्यारा है। फूल का आनंद इत्र नहीं दे सकता वैसे ही जीवन का उत्तम रस भले ही आत्मा में आ जाता हो, आत्मा जीवन नहीं है। केवल आत्मदर्शन काम का नहीं है। आत्मदर्शन युक्त जीवनदर्शन ही महत्व का है। वही सर्वश्रेष्ठ दर्शन है।" (४)

इत्र और फूल के संदर्भ को लेकर काका साहब ने अपने साहित्य के माध्यम से आत्मा और जीवन के दर्शन की अपनी दृष्टि से व्याख्या की है एवं आत्मदर्शन युक्त जीवनदर्शन को सर्वश्रेष्ठ बताया।

**निष्कर्ष**

निष्कर्ष के रुप में हम कह सकते है कि चिंतक के रुप में काका कालेलकरजी का साहित्य हमारी आध्यात्मिक उन्नति करता है तथा इसके द्वारा हमारे आंतरिक जीवन को समृद्ध होने में मदद मिलती है। धार्मिक अनुभव के सम्बन्ध में उनके विचार मानव जीवन के लिये सहायक है। काका साहब ने गीता के प्रेरक तत्व जो कि हमारे जीवन योग के लिये आवश्यक है उन तत्वों की व्याख्या साधारण शब्दों में की है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से मृत्यु को ईश्वर का उत्तम वरदान मानते हुए कहा है कि यदि हम मृत्यु का स्मरण हमेशा रखेंगे तो हर्ष, शोक से परे आनंद का अनुभव कर सकते है जिससे हमारे स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। काका कालेलकरजी ने अपने साहित्य के माध्यम से आत्मदर्शन युक्त जीवनदर्शन की व्याख्या करके बताया है कि जिस प्रकार फूलों से बना इत्र, फूल का आनंद नहीं दे सकता वैसे ही जीवन का उत्तम रस भले ही आत्मा में आ जाता हो, आत्मा जीवन नहीं हो सकती है। इस प्रकार से हम यह कह सकते है कि काका साहब कालेलकरजी का जीवन भर जो धार्मिक चिंतन चलता रहा वह उनके साहित्य में अभिव्यक्त हुआ और वह वर्तमान संदर्भो में मानव समाज के लिये मार्गदर्शक होकर हितकर है।

**संदर्भ ग्रंथ**

१. काका कालेलकर ग्रंथावली, ४, जीवन दर्शन (धर्मोदय), सरोजिनी नाणावटी, यशपाल जैन, हसमुख व्यास, रवीन्द्र केलेकर, विष्णु प्रभाकर, कुसुम शाह, (संपादक मंडल), गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली
२. काका कालेलकर ग्रंथावली, ४, जीवन दर्शन (गीता का प्रेरक तत्व : जीवन योग), सरोजिनी नाणावटी, यशपाल जैन, हसमुख व्यास, रवीन्द्र केलेकर, विष्णु प्रभाकर, कुसुम शाह, (संपादक मंडल), गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली
३. काका कालेलकर ग्रंथावली, ४, जीवन दर्शन (परमसखा मृत्यु), सरोजिनी नाणावटी, यशपाल जैन, हसमुख व्यास, रवीन्द्र केलेकर, विष्णु प्रभाकर, कुसुम शाह, (संपादक मंडल), गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली
४. काका साहब कालेलकर, रवीन्द्र केलेकर, गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली